सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (7)

जन्म : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1899 में महिषादल, में हुआ था। उनका पैतृक गाँव - गढ़ाकोला, में था।

प्रमुख रचनाएँ : परिमल, नए पत्ते, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, गीतिका, बेला, अनामिका, अणिमा (कविता संग्रह); बिल्लेसुर बकरिहा, चतुरी चमार, प्रभावती, काले कारनामे, चोटी की पकड़ (गद्य) आदि उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। उनका संपूर्ण साहित्य आठ खंडों में 'निराला रचनावली' नाम से प्रकाशित हो चुका है। उन्होंने कुछ समय तक समन्वय और मतवाला पत्रिका का संपादन भी किया।

निधन : सन् 1961 में इलाहाबाद में उनका देहांत हो गया।

साहित्यिक विशेषताएँ : कविता को नया स्वर प्रदान करने वाले निराला छायावाद के ऐसे कवि हैं जो एक ओर तो कबीर की परंपरा से जुड़ते हैं जबकि दूसरी ओर समकालीन कवियों के प्रेरणा स्रोत भी हैं। उनका यह विस्तृत काव्य-संसार ओज और माधुर्य, क्रांति और निर्माण, संघर्ष और जीवन; आशा और निराशा के द्वंद्व को अपने भीतर कुछ इस तरह समेटे हुए है कि वह किसी भी सीमा में बंध नहीं पाता। उनका यह निर्बंध और उदात्त काव्य-व्यक्तित्व वास्तविक जीवन और कविता में फाँक नहीं रखता, वे आपस में पूरी तरह से घुले-मिले हैं।

2020/7/29 16:14

Scanned with CamScanner

बादल राग

8. आखिर सुख पर दुख की छाया पंक्ति में दुख की छाया किसे कहा गया है और क्यों ?

→ 'आखिर सुख पर दुख की छाया' पंक्ति में कवि ने शोषित वर्ग के शोषण को दुख की छाया कहा है। कवि ने बताया है कि शोषित वर्ग के जीवन में सुख का समय नहीं आता है अगर आता भी है तो बहुत ही कम समय के लिए आता है। उसको भी शोषक वर्ग जल्दी ही छीन लेता है। इस प्रकार शोषितों के जीवन में दुख का भय इस प्रकार ही छाया रहता है।

9. अशनि - पात से शापित उन्नत शत - शत वीर पंक्ति में किसकी ओर संकेत किया गया है ?

→ 'अशनि - पात से शापित उन्नत शत - शत वीर' पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्रांति होने के भय से सशंकित शोषक वर्ग की तरफ संकेत किया है। शोषक वर्ग को सदैव शोषित वर्ग द्वारा क्रांति करने का भय बना रहता है। उन्हें यह मालूम है कि उन्होंने श्रमिक वर्ग का शोषण करके अपने आपको ऊँचा उठाया है। क्रांति होने से उन्हें अपने वैभव के छीन जाने का भय बना रहता है।

10. विप्लव - रव से छोटे ही हैं शोभा पाते पंक्ति में विप्लव - रव से क्या तात्पर्य है ? छोटे ही हैं शोभा पाते ऐसा क्यों कहा गया है ?

→ 'विप्लव - रव से छोटे ही हैं शोभा पाते' पंक्ति में विप्लव - रव का तात्पर्य यहाँ 'क्रांति' है। क्रांति का आह्वान हमेशा

2020/7/29 16:14

Scanned with CamScanner

निम्न व दलित वर्गों का शोषण ही करता है क्योंकि क्रांति से ही उन्हें अपना अधिकार व समाज में स्थान प्राप्त होता है। क्रांति के द्वारा ही शोषित वर्ग शोभा प्राप्त करते हैं।

8. बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले किन - किन परिवर्तनों को कविता रेखांकित करती है?

→ बादलों के आगमन से प्रकृति में अनेक परिवर्तन दिखाई देते हैं, गर्मी से धरती तपने लगती है और झुलस जाती है, हर चीज रूखी - सूखी और मुरझायी - सी लगने लगती है। बादलों के आगमन से किसानों में नया जोश, उल्लास, स्फूर्ति और खुशहाली का आगमन होता है। छोटे - छोटे पौधे हवा में ऐसे हिलते हैं जैसे वे वर्षा का इंतजार कर रहे हों। सर्वत्र हरियाली के आने का पूर्वाभास होने लग जाता है। इस प्रकार सारी कविता में प्रकृति की विभिन्न संवेदनाओं द्वारा इसका मानवीकरण रूप स्पष्ट हुआ है।

2020/7/29 16:15

Scanned with CamScanner

विभिन्नता और संस्कृति-विभिन्नता में विश्वास नहीं रखते थे। वे विभिन्न प्रकार के विकारों को दूर करने का साधन रामभक्ति को ही मानते थे। हालाँकि तुलसीदास ने दास्यभाव की भक्ति की है, परंतु भक्ति भाव में कहीं पर भी उनके स्वाभिमान को ठेस नहीं पहुँची है। वे एक स्वाभिमानी श्रीराम भक्त के रूप में दिखलाई पड़ते हैं।

8. भ्रातृशोक में हुई राम की दशा को कवि ने प्रभु की नर लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है, क्या आप इससे सहमत हैं? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

⇒ गोस्वामी तुलसीदास ने भ्रातृशोक में हुई राम की दशा का वर्णन प्रभु की नर लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में किया है। हम उनके इस विचार से पूर्णतया सहमत हैं क्योंकि तुलसीदास का राम वर्णन अलौकिक और काल्पनिक न होकर लौकिक है। जिस प्रकार साधारण मनुष्य विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों का मुकाबला करता हुआ जीवनयापन करता है, वैसे ही श्रीराम भी दुख, कष्ट, पीड़ा, विरह और शारीरिक और मानसिक विकारों से ग्रस्त हैं। पत्नी के बिछोह को सहते हुए उसे रावण से पुनः वापिस पाने के प्रयास में लगे श्रीराम को अपने अनुज लक्ष्मण का मूर्छित होना भ्रातृशोक में इतना डुबा देता है कि वे उन सभी स्थितियों का जिम्मेदार स्वयं को मानने लगते हैं। जैसी स्थिति लक्ष्मण-मूर्छा के कारण श्रीराम की होती है, वैसी ही स्थिति भ्रातृप्रेम के कारण एक सामान्य मानव की होती है। अंतर केवल इतना ही है कि ऐसी कठिन

2020/7/29 16:15

Scanned with CamScanner